

**भूवा** पुं. (देश.) रुई, धुआ वि. 1. उजाला 2. सफेद।

**भूविज्ञान** पुं. (तत्.) भूवि. भूगर्भ शास्त्र, विज्ञान जो पृथ्वी की उत्पत्ति, संरचना, संघटन तथा उसके शैलों द्वारा व्यक्त उसके इतिहास का अध्ययन करता है। geology

**भूविद्या** स्त्री. (तत्.) भूवि. भूमितिकी। geonomy

**भूवैज्ञानिक** पुं. (तत्.) 1. भू विज्ञान का, भूविज्ञान से संबंध रखने वाला 2. भूविज्ञान वेत्ता, भू विज्ञानी, भौमिकीविद्, भूगर्भ-शास्त्री।

**भूव्यवस्थापन** पुं. (तत्.) प्रशा. किसी भूखंड को किसी विशेष प्रयोजन के लिए उपयुक्त बनाना, भूमि की किसी विशेष प्रयोजन के अनुरूप व्यवस्था करना, भूमिबंदोस्त।

**भूशायी** वि. (तत्.) 1. भूमि पर शयन करने वाला, पृथ्वी पर सोने वाला 2. जो टूट कर आहत होकर अथवा मृत्यु को प्राप्त कर धरती पर गिर पड़ा हो 2. मृत, मरा हुआ।

**भूषण** पुं. (तद्.) 1. अलंकृत करना 2. आभूषणों आदि से सजाना 3. सुशोभित करना आदि भाव, शोभा बढ़ाने वाली वस्तु, अलंकार, गहना, ज़ेवर, आभूषण जैसे- पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को भूषण अधिक लुभाते हैं 4. रीतिकाल का एक वीर रस प्रधान आचार्य-कवि।

**भूषा** स्त्री. (तत्.) 1. आभूषण, जेवर 2. सजावट, आभूषित करने की क्रिया 3. सजाने का कार्य (समस्त पद में दूसरे सदस्य के रूप में, जैसे- वेश-भूषा)।

**भूषाचार** पुं. (तत्.) 1. सजने सजाने की तकनीकी विधि, विशेष रूप से सँवारना और सजाना 2. अभिजात वर्ग में प्रचलित वेश-भूषा आदि की रीति।

**भूषित** वि. (तत्.) सजा हुआ, जिस को विभूषित किया गया हो, अलंकृत, आभूषणों से युक्त।

**भूष्य** वि. (तत्.) भूषित किए जाने के योग्य, सजाने के योग्य, अलंकारों का हकदार।

**भूसंपत्ति** स्त्री. (तत्.) ऐसी अचल संपत्ति, जिसका संबंध भूमि, खेती, जंगल आदि से होता है।

**भूसंस्कार** पुं. (तत्.) 1. खेती के लिए भूमि को तैयार करने का कार्य, मिट्टी की जाँच कराने के पश्चात् उसको अधिक उपयोगी बनाने के लिए उपचारित करने की प्रक्रिया 2. यज्ञ के लिए भूमि के संस्कार का कार्य, वेदी निर्माण तथा ज्यामितिक रेखाएँ खींचने का कार्य 3. गृह निर्माण के लिए भूमि पूजन का कार्य।

**भूसर्पण** पुं. (तत्.) वर्षा अथवा अन्य प्राकृतिक कारणों से भूमि का खिसकना, भूस्खलन।

**भूसा** पुं. (देश.) अनाज का छिलका, गेहूँ जौ, धान आदि की डंठलों के महीन टुकड़े टि. भूसा गाय, भेड़, बकरी आदि के लिए एक पौष्टिक चारा है।

**भूसी** स्त्री. (देश.) अनाज के बहुत महीन छिलके, चोकर, अनाज की डंठलों के बहुत बारीक टुकड़े, चूरा।

**भूसुता** स्त्री. (तत्.) 1. पृथ्वी से उत्पन्न कन्या, सीता, जानकी 2. स्त्री, नारी 3. पेड़, बेल, पौधे आदि।

**भूसुर** पुं. (तत्.) धरती का देवता टि. ब्राह्मण के लिए भूसुर का प्रयोग किया जाता है।

**भूस्खलन** पुं. (तत्.) प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण, मिट्टी, पत्थर, आदि का अपने स्थान से खिसक कर नीचे की ओर आना, पहाड़ी क्षेत्रों में इस प्रकार की विपदा आती रहती है।

**भृंग** पुं. (तत्.) 1. भ्रमर, भौरा 2. लंपट मनुष्य 3. एक ऐसा कीट, जो किसी अन्य कीट को अपने अधीन करके, अपने जैसा बना लेता है।

**भृंगराज** पुं. (तत्.) भीमराज पक्षी, एक चिड़िया जिसकी आवाज बहुत सुरीली और मधुर होती है और पशु-पक्षियों की आवाज की हूबहू नकल कर लेती है 2. 'भृंगरा' नाम की वनस्पति 3. 'भृंग' नाम का कीड़ा जो किसी भी अन्य कीड़े को विशेष विधि से अपने समान ही बना लेता है 4. बड़ा भौरा।

**भृंगार** पुं. (तत्.) 1. चौड़ी टोंटी वाली सुराही, झारी 2. सुवर्ण, सोना 3. सुवर्ण का घट या पात्र 4.